व्यासश्री Vol. XVIII ISSN 2320-2025

व्यासश्रीः
VYĀSAŚRĪḤ

(A UGC Care listed Refereed Research Journal)
Jan-June 2021
Date of Publication : 30.04.2021

This Issue is dedicated to
Padmashree Ramayatna Shukla

: Chief Editor :
Dr. Buddheswar Sarangi

: Associate Editors :
Dr. Prasanta Kumar Mahala
Dr. Saroj Kumar Padhi
Dr. Jagamohan Acharya
Dr. Bharatbhushan Rath
Dr. Priyabrata Mishra
Dr. Gyanaranjan Panda
Dr. Shiuli Basu
Dr. Subharajit Sen
Dr. Gogikar Prakash

Publisher
Padmashree Ramaranjan Mukherjee Chair of
Maharshi Vyasadev National Research Institute
A Unit of Vyasayanam, Regd. No. 1635-IV-477/04
Vedavyas, Rourkela-4, Odisha
Contact No. : 7003415810, 7044016153
email : vyasasri12@gmail.com

Board of Advisors :
Prof. Harekrishna Satapathy
Prof. Parameswar Narayan Sastri
Prof. Radhaballava Tripathy
Prof. Abhiraj Rejendra Mishra
Prof. Subramanyah Sharma
Prof. Prafulla Kumar Mishra
Prof. Somesh Kumar Mishra
Prof. Harihar Hota
Prof. Srinivas Varkedy
Prof. Chandrakant Shukla
Prof. Arun Ranjan Mishra
Dr. Partha Sarathi Mukhopadhya
Dr. Acharya Devabrata

Hon'ble Referees :
Prof. Kishor Chandra Padhi,
Ex-Professor, S. J. S. V. Puri
Prof. Tapan Shankar Bhattacharya,
Professor in Sanskrit, Jadavpur University, Kolkata
Prof. Satyanarayana Acharya,
Professor in Sahitya, National Sanskrit University, Tirupati

Co-Ordinators :
Dr. Suresh Kr. Banerjee (Academic)
Dr. Umakanta Panda (Finance)
Sri Chandradhwoja Majhi (Finance)
Smt. Laxmipriya Pahadi (Publicity)
Dr. Koushik Malakar (Printing)

व्यासश्री Vol. XVIII ISSN 2320-2025

पद्मश्रीरामयत्नशुक्लमहोदयानां संक्षिप्तेतिवृत्तम्

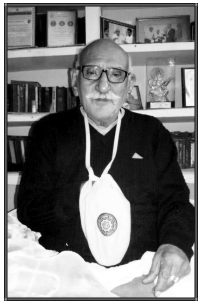

Name :
Professor Ramayatna Shukla
Father's Name :
Late Pandit Ramniranjan Shukla
Mother's Name :
Late Maina Devi
Date of Birth :
15th January, 1932
Present Address :
Gargashram, B-22/159-2 Shankul Dhara, Varanashi, Pin-221010
Retired as :
Professor in Vyakarana
Sampurnanda Sanskrit University, Varanashi
Year of Joining as :
1972
Academic Qualification :
Acharya in Navya Vyakarana, Vedanta, Samkhyayoga. Vidya Varidhi, Vidya Vachaspati

अध्यापनानुभव – ३३ वर्ष

क्रमाकं	संस्था	पद एवं विषय	कार्यकाल
१.	सन्यासी संस्कृत कॉलेज, वाराणसी	विभागाध्यक्ष / व्याकरण	१९६१ से १९७२ तक
२.	गोयनका संस्कृत कॉलेज, वाराणसी	प्रधानाचार्य	१९७२ से १९७३ तक
३.	सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी	विभागाध्यक्ष / सांख्ययोग	१९७३ से १९७६ तक
४.	काशी हिन्दु विश्वविद्यालय, वाराणसी	पाध्यापक / वेदान्त	१९७६ से १९७७ तक
५.	सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी	उपाचार्य / व्याकरण	१९७७ से १९८२ तक
६.	सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी	आचार्य एवं अध्यक्ष /व्याकरण	१९८२ से १९९२ तक
७.	श्री लालबहादूर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली	सम्मान्य आचार्य / व्याकरण	१९९२ से १९९४ तक

प्रशासनिक अनुभव – १४ वर्ष

क्रमाकं	संस्था	पद	कार्यकाल
१.	गोयनका संस्कृत कॉलेज, वाराणसी	प्रधानाचार्य	१९७२ से १९७३ तक
२.	सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी	विभागाध्यक्ष	१९७३ से १९७६ तक
३.	सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी	आचार्य एवं अध्यक्ष	१९८२ से १९९२ तक
४.	सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी	संकायाध्यक्ष	३ वर्ष तक
५.	सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी	मुख्य प्रतिपालक	१९८३ से १९८९ तक
६.	सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी	छात्र कल्याण संकायाध्यक्ष	४ वर्ष तक

योग्यता – विवरण – प्रो. रामयत्न शुक्ल

विशिष्ट समितियों की अध्यक्षता

क्रमाकं	पद	समिति	संस्था
१.	अध्यक्ष	अध्ययन बोर्ड व्याकरण	सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
२.	अध्यक्ष	संकायबोर्ड वेदवदांग	सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
३.	सचिव	व्याकारणानुसन्धानोपाधि –समिति	सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
४.	सदस्य	कार्यपरिषद	सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
५.	सदस्य	विद्यापरिषद	सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
६.	सदस्य	परीक्षा समिति	सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
७.	सदस्य	प्रवेश समिति	सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
८.	सदस्य	आवण्टन समिति	सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
९.	सदस्य	पुस्तकालय	सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
१०.	सदस्य	विवाद समिति सम्बद्धता	सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
११.	अपसंरक्षक	छात्र संध	सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
१२.	अध्यक्ष	अखिल भारतीय न्यायालय प्रयोग समिति	सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

१३. अखिल भारतीय स्तर पर महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में प्राध्यापक, उपाचार्य, प्रधानाचार्य एवं आचार्य पद की नियुक्ति हेतु विशेषज्ञ नामित हुए ओर होते हैं।

१४. नेपाल के विश्वविद्यालय में प्राध्यापक, उपाचार्य, प्रधानाचार्य एवं आचार्य पद की नियुक्ति हेतु विशेषज्ञ नामित हुए ओर होते है।

अनुसन्धानानुभव

विद्यावाचस्पति (डि.लिट.) उपाधि प्राप्त छात्र

१. डॉ:. लक्ष्मण चैतन्य ब्रह्मचरी

२. डॉ. गिरिधरलाल मिश्र रामभद्राचार्य

विद्यावारिधि (पी.एच.डी.) उपाधि प्राप्त छात्र मार्गनिर्देशन में ८. अनुसन्धाताओं ने विद्यावारिधि (पी.एच.डी.) उपाधि प्राप्त कर लिया है।

प्रकाशित पुस्तकें

क्रमाकं	पुस्तक शीर्षक	प्रकाशक
१.	व्याकरण दर्शन सृष्टिप्रक्रिया विमर्श:	ल्यूमिनस बुक्स, वाराणसी
२.	वैयाकरण सिधांत भूषणम पर निरंजनी टीका	फ्रेंच इन्स्टीट्युट, पॉन्डिचेरी श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, गुजरात

प्रकाशित मौलिक अनुसन्धानात्मक लेख

क्रमाकं	लेखशीर्षक	पत्रिका
१.	व्याकरण पदार्थ	सारस्वती सुषमा, सम्पूर्णानन्न संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
२.	अविद्या	प्रजा, काशी हिन्दु विश्वविद्यालय, वाराणसी
३.	भर्तृहरिसम्मतो विवर्तवादः	भास्वती, काशी हिन्दु विश्वविद्यालय, वाराणसी
४.	दर्शननिदर्शनम्	सारस्वती सुषमा, सम्पूर्णानन्न संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
५.	अर्थवत्प्रातिपदिकम्	अभिनन्दन ग्रन्थ श्रीगोपीनाथ कविराज
६.	व्याकरणशब्दाद्वैतविमर्शः	सारस्वती सुषमा, श्रीगोपीनाथ कविराज जयन्तीविशेषांक
७.	वैयाकरणरीत्या सतास्वरूप	संस्कृत अकादमी, लखनऊ
८.	शब्दस्वरूपनुशीलनम्	संस्कृत सम्मेलन, पटना
९.	अपभंश शक्तिविमर्शः	अभिनन्दनगनथ पद्मप्रसाद भट्टराई, नेपाल
१०.	भगवद्गीतायाः सोपान्यायेन कल्याणपरकत्वम्	सारस्वती सुषमा,सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

विशिष्ट संस्थाओं और विशिष्ट गोष्ठियों में पदे गये लेखों का विवरण

क्रमाकं	शीर्षक	संस्था/गोष्ठि/स्थल
१.	विश्व संस्कृतसम्मेलन - स्फोट	काशी हिन्दु विश्वविद्यालय, वाराणसी
२.	विश्व संस्कृतसम्मेलन - शाब्दबोधः	लखनऊ
३.	गवर्नर द्वारा आयोजित कार्यक्रम वाल्मीकिरामायण	पटना
४.	विशिष्ट व्याख्यान एवं उद्घाटन	श्री नारायण इण्टर कॉलेज धनतुलसी, वाराणसी
५.	शब्दस्वरूप पर लेख वाचन	प्राच्यविद्या धर्म विज्ञान संकाय, काशी हिन्दु विश्वविद्यालय, वाराणसी
६.	वाक्यपदीय का सन्दर्भ	दर्शनविभाग, काशी हिन्दु विश्वविद्यालय, वाराणसी
७.	सता स्वरूप का व्याख्यान	कालिदास अकादमी, उज्जैन
८.	दर्शनों मे कर्मवाद पर व्याख्या	कालिदास अकादमी, उज्जैन
९.	शब्दार्थसम्बन्ध	प्राच्यविद्या धर्म विज्ञान संकाय, काशी हिन्दु विश्वविद्यालय, वाराणसी
१०.	संस्कृतभाषायाः प्रचारप्रसारोन्नार्थ विचार -लेख वाचन	१९८९ प्रादेशिक संस्कृत महाविद्यालयाध्य समिति महाधिवेशन

११.	शक्तिस्वरूपम्--लेख वाचन	केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, जयपुर
१२.	वैयाकरणसम्मतो मोक्षः	काशी हिन्दु विश्वविद्यालय, वाराणसी
१३.	पुनश्चर्या पाठयक्रमो मे अनेक व्याख्यान	सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
१४.	पुनश्चर्या पाठ्यक्रमों में विभिन्न संस्थाओं विषर्यो पर अनेक व्याख्यान	काशी हिन्दु विश्वविद्यालय, वाराणसी

परम्परागत शास्त्रार्थो में प्रतिष्ठा

१. विशिष्टविद्वानों की अखिल भारतीय शास्त्रार्थ प्रतियोगिता (व्याकरण) में र १००० (एक हजार रूपये मात्र) का पुस्कार वर्ष-१९६७, आयोजक-माध्वपीठाधीश्वर, उड्डुपी, कर्नाटक।

२. वेदान्तशास्त्रार्थः- अर्धकुम्भ प्रयाग वर्ष-१९८३ में आयोजक-माध्वपीठाधीश्वर, के साथ सम्पन्न हुआ।

३. प्रातः स्मरणीय शृङ्गेरी शंकराचार्य द्वारा आयोजित वाक्यार्थविचार में प्रायः प्रतिवर्ष सम्मिलित होते हैं।

४. वाराणसी के होने के कारण प्रायः समस्त विद्वत्सभाओं में सम्मिलित होकर शास्त्रीय चर्चा को आगे बढाते हैं।

सनातन संस्कृति सवर्धन परिषद की स्थापना

सनातन संस्कृति संवर्धन परिषद का गठन समय ग्रामीण विकास के साथ लोगों में सनातन संस्कृति के मूल्यों और लोकाचार को बढावा देने के उद्देश्य से किया गया है।

गुरुपरम्परा

क्रमाकं	गुरुनाम	विषय
१.	प्रो. रामप्रसाद त्रिपाठी	व्याकरण, न्याय
२.	पं. श्री रामयश त्रिपाठी (महाशय जी)	व्याकरण, मीमांसा, सांख्ययोग
३.	अनन्त श्री विभूषित स्वामी करपात्री जी महाराज	वेदान्त
४.	पं. श्री हरेराम शुक्ल	न्याय, वेदान्त
५.	पं. श्री कमलाकान्त मिश्र	वेदान्त
६.	स्वामी शिव चैतन्य भारती	न्याय, वेदान्त
७.	पं. श्री. एस. सुब्रहमण्यम् शास्त्री	वेदान्त
८.	पं. श्री रामचन्द्र शास्त्री	न्याय, मीमांसा
९.	पं. श्री मातारूप शास्त्री	प्रारम्भिक
१०.	पं. श्री यज्ञदत्त द्विवेदी	प्रारम्भिक व्याकरण

पुरस्कार एवं उपाधिया

क्रमाकं	वर्ष	पुरस्कार/उपाधि	संस्था
१.	१९९०	सरस्वती पुत्र पुरस्कार	श्री व्यास आश्रम
२.	१९९९	राष्ट्रपति पुरस्कार	भारत सरकार
३.	२०००	केशव पुरस्कार	उत्तर प्रदेश सरकार
४.	२००३	विशिष्ट पुरस्कार	उत्तर प्रदश संस्कृत संस्थान
५.	२००५	महामहोपाध्याय उपाधि	श्री लालबहादुर राष्ट्रीयसंस्कृत विद्यापीठ
६.	२००६	वाचस्पति पुरस्कार	बिइला फाउंडेशन
७.	२००६	अभिनव पाणिनी पुरस्कार	कर्नाटक राज्यपाल से
८.	२००७	करपात्री रत्न पुरस्कार	श्री धर्मसंध शिक्षा मंडल
९.	२००८	श्री भाव भावेश्वर राष्ट्रीय पुरस्कार	श्रीसदगुरुदव स्वामी अखंडानन्दं स्मारक धर्मार्थ न्यास
१०.	२००८	भीष्म पितामह उपाधि	अखिल भारतवर्षीय धर्मसंध
११.	२००८	वेदांत एवं सांख्य योग शिरोमणि पुरस्कार	मानवाधिकार संरक्षण एवं मादक द्रव्य निषेध अन्वेषण ब्यूरो
१२.	२०१२	ऋषि सम्मान	श्री शंकर शिक्षायतन
१३.	२०१४	वाकोवाक्यम पुरस्कार	स्वर्गीय श्री कपिल देव पांडे पुण्यतिथि के अवसर पर
१४.	२०१५	डी. लिट. उपाधि	इंडियन इंस्टिट्यूट आफ ओरियन्टल हेरीटेज
१५.	२०१५	विश्वभारती पुरस्कार	उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान
१६.	२०१५	जगतगुरु रामानंदाचार्य पुरस्कार	जगतगुरु रामानंदाचार्य जगतगुरु रामनरेशाचार्य से
१७.	२०१६	संस्कृत गौरव पुरस्कार	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
१८.	२०१७	याज्ञवल्कय पुरस्कार	सर्वमंगला अध्यात्मयोग विद्यापीठ
१९.	२०१८	शास्त्र मूर्ति पुरस्कार	कालिका नंदवेदांत आश्रम
२०.	२०१८	श्रीजगद्गुरु विश्वआराध्य विश्वभारती पुरस्कार	श्री मज्जगद्गुरुविश्वआराध्य ज्ञान सिंघासन महापीठम
२१.	२०१८	वैयाकरण केसरी उपाधि	भगवान श्री लक्ष्मी नारायण धाम
२२.	२०१९	वैयाकरण भूषण पुरस्कार	इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र
२३.	२०१९	काशी विद्ववत्गौरवम् पुरस्कार	बीएपीएस स्वामीनारायण शोध संस्थानम

Respected Scholars, Namaste, As per our advisory board's decision all scholars should follow the intruction for preparing their research paper for our care listed journal VYASSHREE.

Printing area --
Wide - 10.5cm,
Length - 17cm,
Letter Size - 13 Hindi/Devnagari and
English 11 (Arial Normal)

Paper Format --

1. Title of the Paper (font size 16)
2. Author's Name (font size 13)
3. Abstract (font size 12)
4. Key Words (italics)
5. Your Paper
6. Conclusion
7. Foot Note (font size 9)
8. List Reference Book (size 9)
9. Page limit 6 to 10 pages

Please follpw the instruction to avoid hazards for publication.

With regards
Dr. Buddheswar Sarangi
Chief Editor
Vyasashree

पुरोवाक्

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्।
मम वर्त्मानुवर्त्तन्ते मनुष्याः पार्थ! सर्वशः।। गीता ४/११

ज्ञानकर्मसन्यासयोगाख्ये प्रकृष्टाध्याये जगदानन्दकन्दस्य भगवतः करुणावरुणालयस्य मुखनिसृतेयं भगवती सरस्वती स्वाम्लानप्रतिभया प्रशिक्षयति यद् भगवत्प्राप्तिः मनुष्यस्य चिन्तनानुरूपेव। यः किमपि करोति तस्य फलं स्वयं स्वायुषकाले अत्रैव भुङ्क्ते। पुरुषसूक्तानुसारं परमपुरुषस्य एकचतुर्थांशः अत्र जगति जन्ममरणचक्रं परिचालयति। यत्किमपि क्रियते भगवतो मार्ग एव। तत्र स्वबुद्ध्या सदसद्विवेकपरो यदा सत्कर्मणा निरासक्ततया करोति तदा जगदानन्दं परमानन्देन सह अनुभवति, यदा कामक्रोधलोभादिपरस्सन् कर्मणि प्रबृत्तो भवति तदा दुःखसुखात्मानित्यसंसारे विचरति। सर्व एव मार्गो भगवतः मार्गो भवति यतः सर्वत्र भगवतः सत्ता विद्यते।

अस्याः भारत्याः व्यङ्ग्यार्थो जीवातुभूतस्सन् सद्बयान् उपदिशति यत् करोणातापेऽपि काले स्वधर्ममनु गत्वा स्वकर्मणि सर्वे तिष्ठेयुः। जितश्रमाः मानवाः सर्वदा सुखिनः। वयं सर्वे विद्याम्बुधिसन्तरणकुशलाः। अतः विद्याभ्यासेन तत्परिवेषणेन च कालं यापयामश्चेत् भगवतः कृपापात्राणि भविष्यामः। शब्दशक्तिः महती वर्त्ततें। अज्ञानमार्गात् सन्मार्गमानेतुमस्याः कौशलं सर्वजनवेद्यम्।

भगवतः श्रुतिवाक्यमिदं ध्यायं ध्यायं व्यासश्रीपरिवारः ज्ञानचर्च्चायाः धाराद्वयं सर्वदा पोषयति। एका भवति शास्त्रीयतत्त्वानां पर्यालोचनार्थं शतदीपव्याख्यानमालायाः अविच्छिन्ना धारा, अपरा भवति व्यासश्रीप्रकाशनधारा। अस्मिन् क्रमे व्यासश्रीपत्रिकायाः १८तमसंख्या अद्य विदुषां सान्निध्यं लभते। तत्रापि प्रच्छदपटे विद्यानगर्याः विश्वविश्रुतानां पद्मश्रीसम्मानभाजां पदपदार्थज्ञानकुशलानां महामहोपाध्याय **रामयत्नशुक्लपादानां** दिव्यरूपदर्शनं कस्य वा मोदाय न स्यात्। काशीपराम्परायाः वरिष्ठाः शाब्दिका इमे बहूनां शिष्याणां

जन्मदातारः कर्मदातारश्च। द्वितीयपाणिनिसमा ते अद्य व्यासश्रीपरिवारे आशीर्वादभानून् विकीर्य महदुपकारं साधयन्ति। तेषां चरणकमले शब्दस्रगियं समर्प्य भारतीयविद्वद्वन्दनपरम्परां व्यासश्रीपरिवारः सम्बर्धयति। किञ्चास्याङ्कस्य सम्बन्धने ये विद्वांसः स्वशोश्राभारतीः प्राददन् त एव धन्याः, यतः तत्प्रदत्तेयं शब्दपुष्यमाला महतः विदुषः सपर्यायै कल्पिता।

सर्वेभ्यः सस्कृंतपरिवारसदस्येभ्यः सस्कृंतदिवसस्य नैके शुभाशयाः। अन्तिमे इदमस्तु मङ्गलवावयम —

कृष्णापराः नृलोकेऽत्र संसारे छिन्नसशंयाः।
भुञ्जन्ति रसमार्गे ते मोक्षदं मधुरं फलम्।। इति

प्रकाशनतिथिः
३०-०४-२०२१

विद्वच्चरणसेवकाः
बुद्धेश्वरषडङ्गी
मुख्यसम्पादकः
तथा व्यासश्रीपरिवारस्य सदस्याः।

विषयसूची

सृष्टिः	स्रष्टा	पृष्ठम्
* पद्मश्रीरामयत्नशुक्लमहोदयानां संक्षिप्तेतिवृत्तम्		(iii-xv)
** प्रास्ताविकम्		(x-xi)
*** सूचीपत्रम्		(xii-xv)
१. शास्त्रानुसन्धाने अर्वाचीनधारा	बुद्धेश्वरषडङ्गी	1
२. व्याकरणाध्ययनस्य गूढार्थविमर्शः	ड. पुनम सिं	8
३. विभक्त्यर्थप्रकाशे दर्शितानां शिष्टप्रयोगाणां विमर्शः	ड. श्रीमन्तभद्रः	17
४. अग्निपुराणदृष्ट्या कारकतत्त्वपरिशीलनम्	डॉ. सुजितमाइतिः	32
५. शिक्षकप्रशिक्षणे सूक्ष्मशिक्षणस्य वैशिष्ट्यम्	डॅ. सहेलि मजुमदार	46
६. यौगिकी शक्तिपातदीक्षा	वाचस्पतिशास्त्री जोशी	53
७. संस्कृतवाङ्मये कविवररमाकान्तशुक्लस्य योगदानम्	शुभम् मुखोपाध्यायः	63
८. समासप्रकरणे उपसर्जनस्य महत्वम्	चिन्मयः मण्डलः	76
९. अतिदेशसूत्राणां सादृश्यमूलकत्वम्	शम्पा पाल	96
१०. अभिज्ञानशकुन्तलनाटकस्य प्रथमाङ्के अलंकारध्वनि विचारः	मन्टेश्वरः वर्मन् तथा आचार्या सुदेष्णा भट्टाचार्या	104
११. रावणसंहितानुसारं पञ्चमभावसमीक्षणम्	डॉ. विश्वरञ्जनपतिः	120
१२. नित्यमोक्षस्य ज्ञानसाध्यत्वविचारः	डॉ सोमा बन्दोपाध्याय	130
१३. वैदिक भाषा में लेट् लकार एक विवेच्य विषय	डॉ. नवीन कुमारी	136
१४. सांख्यदर्शने प्रमाणस्वरूपम्	गीताञ्जलिः त्रिपाठी	142
१५. वङ्गप्रदेशस्य अर्वाचीनदूतकाव्यपरिचयः	टीना मण्डल	150
१६. वैदिकवाङ्मये भक्तिः	डॉ. शत्रुघ्नपाणिग्राही	156
१७. शिशुपालवधस्य काव्यशास्त्रीयं समीक्षणम्	डॉ. बाबूलालमीना	161

सृष्टिः	स्रष्टा	पृष्ठम्
१८. राजनीतिः, तथा आधुनिककवीनां दृष्टिः	ड. मिठु रानी मइश	168
१९. भक्तिरसविवेकः	डॉ. शशिकान्तः द्विवेदी	176
२०. विचारव्यवस्थायां धर्मशास्त्रस्य प्रभावः	ड. स्वपनः माझिः	194
२१. धर्मशास्त्रे कौटुम्बिकं मूल्यम्	ड. सुरजितः व्यानार्जी	199
२२. श्रीमद्भागवतमहापुराणे धार्मिकजीवनदर्शनम्	डॉ. आशा सिंह रावत	212
२३. स्थानीय इतिहास लेखन में मौखिक स्रोत	डॉ. राजकुमार	221
२४. चतुर्दशसूत्राणां वैशिष्ट्यम्	डॉ. सुधाकरः मिश्रः	231
२५. नामीति सूत्रे अङ्गाधिकारप्रयोजनम्	डॉ. सौमित्रः आचार्यः	237
२६. तर्कभाषादिशा संशयस्वरूपम्	डॉ. कुलदीपः कुमारः	248
२७. भागवतदशमस्कन्धे श्रीधरस्वामिकृतभावार्थदीपिकायाः समीक्षणम्	डॉ. काजल पात्र	255
२८. Inscriptional Poet Umapatidhara	Dr. Partha Sarathi Mukhopadhyay	262
२९. वैदिकसाहित्येषु प्रकृतिः	डॉ. दिलीपः पण्डा	266
३०. वेदाङ्गेषु छन्दसां प्रामुख्यम्	डॉ. श्वेतपद्मा शतपथी	271
३१. उत्तरमेघे कालिदासस्य पर्यावरणचेतना	डॉ. लक्ष्मीकान्तषडङ्गी	277
३२. निपातनसिद्ध-यत्-प्रत्ययान्तपदविमर्शः	डॉ. सुनेली देइ	283
३३. पत्रप्रियाकाव्यसम्पदः	डॉ. सोमनाथः दाशः	291
३४. साधुभद्रेशदासकृतसत्सङ्गदीक्षा	डॉ. ज्ञानरञ्जनः पण्डा	297

३५. गौडीयवैष्णवदर्शनपरम्परायां .....
डॉ. सुकन्या सेनापति 305
३६. Rivers in Valmiki Ramayana And Exploring .....
Dr.. Sarita Sharma 311
३७. वैष्णवसम्प्रदायानां प्रामाणिकग्रन्थ .....
डॉ. अनुराधा मण्डल 317
३८. संस्कृतव्याकरणशास्त्रस्य व्युत्पत्तिः .....
अतनुः आढ्यः 322
39. Impact of Dharmasastra and Arthasastra in the Internal Administration of Bengal as reflected ....
Dr.. Arpita Dey 328
40. Apsaras in Sanskrit Literature
Miss Paromita Biswas 334
41. Effective Communication Skills in Ramayana
Dr. Gogikar Prakash 345
42. Evolution of architecture of Hindu Temples in India
Dr. Jasvir Singh 348
43. Exploration of Ancient Indian Economic Structure through Kautiliya Arthasastra 356
Dr. Subhashree Dash
44. Sarvajnatma Muni's Contribution to Bhaaaa Epistemology
Prof. Ramesh Bharadwaj 373
45. Royal Poets of Sanskrit Literature : A Study from Saduktikarnamrta
Debabrata Sarkar 385
46. Research the Genesis of Argument of Nyaya-Vaisesika
S.K. Rakibul Sk 391
47. The Filial Affection and Parent-Child Relationship : A Comparative Study of Kalidasa's .....
Mahua Bhattacharyya 398
48. Eliot's Indian Philosophic Therapy To Fertile Modern European Waste Land
Dr. Rajneesh Pandey 411
49. Women's right of Property in the Dharmashastras : ...
Rajib Sarmah 417
50. Scrupulous Rumination on life and Its Priorities in When Loss is Gain
Dr. Rajneesh Pandey 425

51. A Brief Study of Origin and Development of Story Literature in Modern Sanskrit writings
Preeti R. Pujra 429
52. Moral Values as reflected in the Upaisads
Sanchita Kundu 444
53. Advaita's Concept of Change! An analysis in front of Integralism
Dr. Saroj Kumar Padhi 456
54. HumanTraffiking
Dipendu Mondal 462
55. The Devolopment of the figure ....
Pratim Bhattacharya 470
56. Prioritize to Customise .....
Dr. Y. Jahangir & Mariah Tahseen 477
57. संप्रदानविमर्शः 486
डा. मधुकेश्वर भट्टः
58. The System of Tax Collection in .....
Dr. Jagamohan Acharya 494
59. Evolution of Sanskrit Grammar : A Glimpse
Dr. Pritilaxmi Swain 497

Writer's World 502
Declaration
Registation Form